VOL- VIII ISSUE- VI JUNE 2021 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 7.149 ISSN 2349-638x

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में परिवारिक चित्रण

विजय कुमारी भारद्वाज पत्नी रामबीर भारद्वाज
वी पी ओ कुंगड, जिला भिवानी
वाया मुंढाल (बढ़ा पाना, नजदीक शिव मंदिर)

हिंदी महिला साहित्यकारों में मृदुला गर्ग का नाम आदर के साथ लिया जाता है। हृदय से भावुक और संवेदनशील श्रीमती मृदुला गर्ग ने कथा साहित्य में अपनी अलग छवि बनाई है। इसके अतिरिक्त साहित्य में घूमते–फिरते मानवीय मूल्यों की पुन: स्थापना के लिए अपना अमूल्य योगदान दिया है। आज मृदुला गर्ग जी साढोत्तरी हिंदी लेखिकाओं में चर्चित लेखिका है। इनके बारे में कहा जा सकता है कि यह जमीनी साहित्यकार हैं, उन्होंने अपने परिवेश को करीब से देखा है, समाज में घटने वाली प्रत्येक घटना का विश्लेषण उनकी कलम ने किया है। इनका एक विषय व्यक्तित्व उभरकर सामने आता है। इनके उपन्यासों में पारिवारिक चित्रत जीवंत हो उठा हो।

परिवारिक चित्रण :

व्यक्ति समाज की इकाई है और व्यक्ति से ही परिवार का निर्माण होता है। अत: परिवार में व्यक्ति से जुड़े उन सभी बिंदुओं पर अवलोकन किया जाता है जो व्यक्ति का समाज में स्थान निर्धारित करता है। व्यक्तियों का वह समूह जिसके साथ उसका रक्त का संबंध होता है परिवार कहलाता है। अत: मृदुला जी के आठ आलोच्य उपन्यासों में परिवार का बारीकी से चित्रण मिलता है। 'उसके हिस्से की धूप' लेखिका का पहला प्रकाशित उपन्यास है जिसमें लेखिका ने स्त्री और पुरुष संबंधों के मध्य मानवीय स्वतंत्रता की भावना को आधार बनाया है। यह लेखिका का एक प्रौढ़ उपन्यास है। इसमें लेखिका निजता की भावना को महत्व देती दिखाई पड़ती है। प्रेम और विवाह के अनछुए पहलू इस उपन्यास में लक्षित होते हैं। विवाह से परिवार का निर्माण होता है, विवाह और सामाजिक मान्यताओं का द्योतन करता है जिसमें स्त्री और पुरुष मिलकर नव जीवन का निर्माण ही नहीं करते बल्कि समाज में विकास और विश्वास भी कायम करते हैं। मनीषा उपन्यास की केंद्रीय पात्र है जितेन उसके पति का नाम है। अब दोनों में द्वंद है और दोनों अलग–अलग रहते हैं परंतु दोनों में प्रेम अब भी है। जितेन बड़ा समर्पित व्यक्ति है। वह समझदार भी है और मनीषा को इस यांत्रिक समाज में आपाधापी से ऊपर उठकर वह सब देना चाहता है, जो वह दे सकता है। लेखिका ने मनीषा के माध्यम से परिवार के कारूणिक अंत का प्रतिपादन भी इसी उपन्यास में किया है। 'वंशज' परिवार की सार्थक व्याख्या है। परिवार में जितना मेल पिता–पुत्र में होना चाहिए जितना स्वाभाविक है वह नहीं है। उपन्यास में शुक्ला साहब का मध्यम परिवार है और परिवार के मुखिया शुक्ला साहब हैं जो अनुशासन प्रिय और शिक्षित हैं। वंशज परिवार चित्रण का जीवंत दस्तावेज है। आदर्श और यथार्थ का मिलाजुला स्वरूप इस उपन्यास में देखने को मिलता है। 'चितकोबरा' की बात की जाए तो चितकबरा में परिवार संसार का लेखिका ने खुलकर चित्रण किया है। परिवार के आधारसूत्र नारी की भावनाओं का चित्रण प्रस्तुत है। इस उपन्यास में परिवार की निरर्थकता का उद्घाटन भी नजर आता है। इस उपन्यास में अश्लीलता का उन्मुक्त वर्णन भी परिवार की परंपराओं का एक विद्रोह सा नजर आता है।

'अनित्य' एक राजनीतिक संदर्भ का उपन्यास है, इसमें लेखिका ने अपने लेखिका के रूप में अपनी भूमिका अदा की है। यह भूमिका अदा करने

की प्रेरणा लेखिका ने अपने परिवार से प्राप्त की है। लेखिका इस उपन्यास के माध्यम से आम साधारण लोगों की नीतियों और मानसिकता का वर्णन करती हुई आगे बढ़ती है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मानते हैं ''परिवार सामाजिक सद्गुणों की प्रथम पाठशाला है।'' उपन्यास का प्रमुख पात्र अनित्य है। वह अपने संवादों को कथ्य के माध्यम से उद्देश्य की ओर लेकर चलता है। अनित्य घर का निकम्मा लड़का था, अभिजीत की माँ उसकी माँ थी। पर वह अभिजीत से चार साल छोटा था। इतना बड़ा नहीं की माँ की जिम्मेदारी लें और इतना बड़ा नहीं की माँ की जिम्मेदारी बने। उपन्यास के जितने पात्रों को लेखिका ने अनित्य लिखने के लिए अपनाया है, सभी पारिवारिक पृष्ठभूमि का द्योतन करते हैं। 'मैं और मैं' के लेखन के केंद्र में नारी है। एक लेखिका नारी है जो परिवार के प्रति प्रतिबद्ध होकर अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करते दिखाई पड़ती है। उपन्यास की माधवी एक माँ है, एक पत्नी है और एक सुशील ग्रहणी की भूमिका भी निभाती है। लेखिका यह बात स्पष्ट कर देती है वह स्त्रीवादी लिखी का नहीं तो इस दृष्टि से यह पारिवारिक सामाजिक रिष्तों को आधार बनाकर उद्देश्य की ओर बढ़ने वाली कहानी है। शोषण मानव का स्वभाव है कोई शोषित होता है कोई शोशक होता है। ये सब मनुष्य के व्यक्तित्व से पारिवारिक संस्कारों के निमित्त है। माधवी परिवारिक मूल्यों के प्रति निष्ठावान है। 'कठगुलाब' की पारिवारिक चित्रण के तौर पर कहा जा सकता है कि इस उपन्यास में औरत और मर्द के अंतरंग संबंधों को परिवार के संदर्भ में जाना जा सकता है। नारी परिवार की पृष्ठभूमि का कार्य करती है चाहे वह नारी भारत में हो या विश्व के किसी अन्य देश में। इसमें भारत के कई बड़े शहरों का नाम आया है जैसे – बड़ौदा, धानपुर आदि। अत: यह निष्चय ही कहा जा सकता है कि इन उपन्यासों में भारत और विश्व के अन्य नगरों के समाज का खुलकर वर्णन हुआ है। समिता नमिता की बहन है। परिवार की हालत बदतर होने के कारण अपनी बहन का घर अपना सहारा बनाती है और अपने जीजा के हाथों अपना शोषण करवाती नजर आती है। समिता की बहन नमिता यह सब सहती हुई अपने परिवार को बांधे आज तक अपना जीवन जी रही है। यह भारतीय पुरुष की मानसिकता का द्योतन करती जिसमें वे साली को आधी घरवाली मानते हैं।

'मिलजुल मन' में लेखिका गुल और मोगरा के माध्यम से बेहद संवेदनशील परिवारिक संदर्भ चित्रित किए हैं। इस उपन्यास में गुल और मोगरा नामक दो बहनों की कहानी का वर्णन है। दोनों बहने एक ही व्यक्ति से प्यार करती हैं। यह उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में लिखकर लेखिका ने दोनों बहनों की संवेदनाओं का चित्रण किया है। पारिवारिक और सामाजिक संदर्भ उभरकर सामने आए हैं। लेखिका का यह उपन्यास नारी हृदय की चेतनाओं के संदर्भ में विभिन्न परतों का वर्णन है। इस प्रकार लिखी का परिवार के विभिन्न स्वरूपों को लिखती चलती है। औरत का माँ बनना ही परिवार का निर्माण करता है। 'वसु का कुटुंब' एक लंबी कहानी स्वरूप उपन्यास है। इसमें यदि परिवारिक संदर्भो की बात की जाए तो निष्चय ही परिवार का चित्रण परिलक्षित होता है। लेखिका बताती है, ''अलबत्ता इस परिवेश में वही है जो असल में है, जो वाकई घट रहा है हमारे आसपास।'' साफ है कि परिवार और समाज से कटकर व्यक्ति का अस्तित्व षून्य होता है। वह पहले परिवार में फिर समाज में अपना योगदान समर्पित करता है। यह कहानी सर्वविदित निर्भया कांड को लेकर लिखी गई। अत: उपन्यास को केंद्रीय पात्र का नाम भी दामिनी ही है। उपन्यास के आरंभ में परिवार के प्रति चिंता व्यक्त की गई है। यह दिल्ली शहर का परिवार है। ''वीञ केञ सपोत्रा घर बना रहे हैं। अच्छा कर रहे हैं। घर बनवाओ सवाब लो। परिवार वालों को बारिश लू से निजात मिले। बच्चे जन्म ले। व्यक्ति इस दुनिया में कर्म और जीवन का सामंजस्य इसलिए करता है, धन संचय और राजकार्य इसलिए करता है कि उसकी संतान और उसके बच्चे आने वाले समय में सुखी संपन्न रहें। इस संदर्भ में महादेवी वर्मा का

कथन है लोकप्रिय है कि इस संसार के समस्त कार्य अपने बच्चों को खिलाने पिलाने के निमित्त हैं और इसके अतिरिक्त इस संसार में कार्यों का कोई औचित्य नहीं है।'' परिवार नष्ट हो जाए पूरा शहर बर्बाद हो जाए। गाँव लूट जाए तो आदमी के पास क्या बचता है। यह उपन्यास 'वसु का कुटुंब' की बात नहीं। हमारे भारतीय समाज की संस्कृति ही ऐसी है, ''हमारी संस्कृति की खासियत यह है कि हर मौके पर ऐसे काम के सूत्र वाक्य मिल जाते हैं।'' असल में परिवार के बिना आदमी का अस्तित्व सुनने है। वह परिवार के अपने कामयाबी की उड़ान भरता और परिवार के लिए हर प्रकार के गलत सही, अच्छे बुरे कार्य करता है।

इस प्रकार लेखिका ने आलोच्य उपन्यासों में परिवार के आधार पर इस उपन्यास की कहानी का ताना–बाना बुना है और अपने उद्देश्य व्यक्त किए हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि का का चित्रण करने में लेखिका का सफल सिद्ध हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. कठगुलाब, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या १६
२. वही
३. मिलजुल मन, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या १२
४. वही, पृ २०
५. वही, पृ ३१८
६. वसु का कुटुम्ब, मृदुला गर्ग, भूमिका से
७. वंशज, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या ७२
८. उसके हिस्से की धूप, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या ३८
९. चितकोबरा, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या १५
१०. मैं और मैं, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या १०१
११. अनित्य भूमिका से
१२. वसु का कुटुम्ब, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या ३७
१३. वंशज, मृदुला गर्ग, पृष्ठ संख्या ३७